ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 369-370
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

प्राचीन कालीन भारतीय नारी

डॉ0 गिरीश मणि त्रिपाठी

असि0 प्रोफेसर–राजनीति विज्ञान, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ0प्र0) भारत

Received-18.12.2023, Revised-22.12.2023, Accepted-27.12.2023 E-mail : drgirishmanitripathi 15@gmail.com

सारांशः ***प्राचीन काल से ही हिन्दू समाज में स्त्रियों का सम्मान व आदर रहा है। डॉ0 ए.एस. अल्तेकर कहते हैं कि – "अन्य देशों के इतिहास में जितना हम पीछे की ओर जाते हैं उतनी ही स्त्रियों की स्थिति उच्च दिखाई देती हैं। यह आश्चर्य की बात हैं।" प्राचीन काल से हिन्दू समाज में स्त्रियों का सम्मान व आदर मर्यादा युक्त रहा हैं। यह जननी और सामाजिक जीवन की धुरी मानी गई है। राधा कृष्णन ने कहा है कि कुल्लूक ने मनुस्मृति पर टीका करते हुये वाजसने यी ब्राह्मण से एक अंश उद्धृत किया है – पुरुष अपना केवल आधार भाग है जब तक उसे पत्नी प्राप्त नहीं होती है वह अपूर्ण रहता है और इसलिये पूरी तरह उत्पन्न नहीं होता। जब वह पत्नी को ग्रहण करता है तब ही वह पूरी तरह उत्पन्न होता है और पूर्ण बनता है। अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति नर – नारी के पारस्परिक सम्बन्धों को मान्यता देने की प्रतीक है।[1]***

इसी तरह जयशंकर प्रसाद ने नारी के प्रति अपनी उदात्त भावना को निम्नलिखित पदों में प्रस्तुत किया है – "नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग–पग तल में पियूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।"[2]

कुंजीभूत शब्द– भारतीय नारी, हिन्दू समाज, मनुस्मृति, उदात्त भावना, सामाजिक जीवन, जननी, विवाह, शिक्षा, सम्पति

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। हिन्दू समाज में उनका सम्मान और आदर प्राचीनकाल से मर्यादा युक्त था। मनु ने मनुस्मृति में लिखा है–

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। यत्रैवास्तृ ना पूज्यन्ते, सर्वास्त फला किया।"[3]

अर्थात् जिस कुल में स्त्रियों कि पूजा नहीं होती है उस कुल में देवता प्रसन्न होते है जिस कुल में उनकी पूजा नहीं होती उस कुल में सब कर्म निष्फल होते हैं।

वैदिक युग मे उन्हे विवाह, शिक्षा, सम्पति आदि अधिकार प्राप्त थे। बाल विवाह का प्रचलन नहीं था। नव वधू गृह की साम्राज्ञी होती थी। वह पति के साथ मिलकर घर के याज्ञिक कार्य सम्पन्न करती थी। वैदिक युग में स्त्रियाँ शिक्षा बिना किसी भेद–भाव के ग्रहण करती थी। लोपा मुद्रा, धोषा, अपाला, इन्द्राणी, सिकता इन विदुषी महिलाओं ने वैदिक त्रच्याओं का प्रणयन किया। उस समय कन्याओं का भी उपनयन संस्कार होता था।4

अथर्ववेद में भी वधू को साम्राज्ञी कहकर संबोधित किया गया है। इस युग में पति की पूर्णता पत्नी के अस्तित्व में ही निहित मानी जाती थी।[5]

वैदिक युग में पर्दा प्रथा का पूर्णतः अभाव था कन्याएं निश्चिन्त होकर युवकों के साथ विद्या ग्रहण करती थी।

वैदिक युग में सामाजिक एवं सार्वजनिक अवसरों पर स्त्रियों की उपस्थिति आम बात थी। इसका एक और प्रमाण मिलता है कि छात्राये दो भागों में विभाजित थी। ब्रम्हवादिनी तथा मंत्रदृष्टि ब्रम्हवादिनी ब्रम्हविज्ञान एवं दर्शन की आजीवन विद्यार्थी थी जबकि मंत्रदृष्टि 15–16 वर्ष की आयु तक अर्थात् विवाह के पूर्व तक ही विद्या अभ्यास करती थी। मैत्रेयी, आत्रेयी, गार्गी आदि विदुषी नारियों के प्रमाण प्राप्त होते हैं। राजा जनक की सभा में गार्गी ने उस समय के सबसे प्रसिद्ध दार्शनिक याज्ञवलक्य को पराजित किया था। गार्गी उस समय के आठ प्रसिद्ध दार्शनिकों में से एक थी।

उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की दशा पूर्ववत् बनी रही। कन्या की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता था किन्तु धीरे–धीरे स्त्री शिक्षा में गिरावट आई अब उन्हे घर पर ही शिक्षा दी जाती थी। वे पिता, भाई या चाचा से शिक्षा ग्रहण करती थी। इस काल में विधवा स्त्री हेय दृष्टि से नही देखी जाती थी। विष्णु पुराण में विधवा को सम्पति का उत्तराधिकारिणी माना गया है। स्त्रियों के सम्बन्ध में जीमूतवाहन व विज्ञानेश्वर जैसे शास्त्रकारों ने पुत्री को माता के हिस्से का एक चौथाई सम्पति भाग कन्या को दिये जाने पर बल दिया है। उत्तर वैदिक काल में विज्ञानेश्वर जैसे विद्वानों ने कहा है कि – स्त्रियाँ घर के बाहर किसी से कहे बगैर और बिना चादर ओढे बाहर न जाए, शीघ्र न निकलें। वणिक सन्यासी, वृद्ध, वैध के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष से बात न करें। अपनी नाभि को ढंके रहे। वस्त्र एडी से लेकर सिर तक पहने, स्तनों को कपडे से ढके रहे। मुँह ढक कर हँसे।6

इस प्रकार इस युग में नारियों के धार्मिक सामाजिक स्वतन्त्रता पर अंकुश लगा दिया गया।

महाकाव्य काल में स्त्रियों की स्थिति गिरती गई, बाल्मीकि रामायण से ज्ञात होता है कि कन्या का पिता होना किसी भी व्यक्ति के लिये दुख का कारण होता था क्योंकि यह मान्यता थी कि यदि वह कन्या स्वेच्छा से किसी भी पुरुष का वरण करती है तो वह माता–पिता व श्वसुर दोनों कुलों को संशय में रखती है।[7]

पुत्री की रक्षा करना पितृ धर्म माना जाता था। यद्यपि महाकाव्य युगीन समाज में ही सीता ने शास्त्रों का भी अध्ययन किया था। कैकेयी और तारा भी शास्त्र ज्ञान में निपुण थी। मन्थरा ने कैकेयी को उकसाने के लिये जो बातें कही उससे पता चलता है कि वह राजनीति में पारंगत थी।[8]

कहीं–कहीं स्त्रियों को सैन्य शिक्षा भी दी जाती थी। पति के साथ पत्नी भी युध्द मे जाती थी। रथ का संचालन करती थी। दशरथ की पत्नी कैकेयी ने युद्ध स्थल में दशरथ का साथ दिया और रथ संचालन किया तथा घायल होने पर दशरथ का उपचार भी किया। महाभारत कालीन समाज में राजा को स्त्रियों का रक्षक कहा गया है।9

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

नारी को कन्या, पत्नी व माता के रुप में उच्च स्थान प्राप्त था। कन्या की पवित्रता के कारण ही सिंहासनारोहण या राजतिलक जैसे शुभ कार्यो में कन्या की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी।

पालि साहित्य में नारी शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक बातें उपलब्ध है इस काल में कई विदुषियों का उल्लेख मिलता है। शुभा, समेधा उच्चवंश की कन्यायें थी।

ऐतिहासिक साक्ष्यों से ऐसा ज्ञात होता है कि प्राचीन भारत में ऐसी भी स्त्रियाँ हुई जो शासन व्यवस्था और राज्य के प्रबन्ध में दक्ष होती थी मौर्य काल में महिलाओं की दशा उन्नत थी समाज में उनका आदर और सम्मान होता था। इस काल में स्त्रियाँ राज्य में गुप्तचर और अंग रक्षक होती थी। चन्द्रगुप्त मौर्य की रक्षा का भार स्त्रियों पर था।

दूसरी शदी ई0पू0 में सातवाहन वंशीय राजमाता नयनिका ने अपने अल्प वयस्क पुत्र का संरक्षण करते हुये स्वंय प्रशासन का भार सम्भाला। गुप्त वंशीय चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की पुत्री प्रभावती ने चौथी सदी में अपने पति की मृत्यु के पश्चात पुत्र की अल्पवयस्कता के कारण स्वंय शासन किया। अक्मा देवी और भैला देवी जैसी गुजरात की चालुक्य वंशी रानियों ने अपने राज्य का प्रशासन निष्ठापूर्वक किया।

1053 ई0 में मलीवा देवी बनवासी प्रदेश पर शासन कर रही थी। जय सिंह तृतीय की ज्येष्ठ बहन 1022 ई0 में किन सुकड जिले पर शासन कर रही थी 1077 में कुमकुम देवी कर्नाटका के धारवाड जिले के एक हिस्से पर शासन किया।10

इस प्रकार देखा जाये तो प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियाँ राजनीति एवं प्रशासन में अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रही थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रो0 राधा कृष्णन : धर्म और समाज – पृष्ठ 191,192
2. जयशंकर प्रसाद : कामायनी द्वितीय संस्करण प्रकाशन इलाहाबाद 1989
3. मनुस्मृति टीकाकरण, पण्डित हरगोविन्द शास्त्री , चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी
4. के0 सी0 श्रीवास्तव : प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति यूनाइडेट बुक डिपो इलाहाबाद
5. अथर्ववेद – 10/85/46
6. सरोज कुमारी गुप्ता : भारतीय नारी कल आज और कल प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली , 2007 पृ0 – 35
7. बाल्मीकि रामायण : 7/9/10 – 17/12/11
8. बाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड 7/23 , 8/4 – 13
9. महाभारत , 2/5/73
10. सरोज कुमारी गुप्ता : भारतीय नारी कल आज और कल प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली 2007 पृ0 – 210

*****